REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

गांधी की अहिंसा की अवधारणा व उपयोगिता

अश्वनी कुमार
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग ,
बनवारी लाल जिंदल सुईवाला महाविद्यालय , तोशाम जिला–भिवानी (हरियाणा).

सारांश
किसी भी समाज या राष्ट्र का स्थाई विकास कुछ नि''चित सिद्धान्तों या विचारधारा के आधार पर होता है। वर्तमान समाज में मानव जीवन स्वयं केन्द्रित सोच पर आधारित होता जा रहा है जिससे मानव कल्याण और राष्ट्र कल्याण व विकास की उपेक्षा हुई है। गांधी की अहिंसा की विचारधारा वर्तमान संदर्भ में उपयोगी है यह विचारधारा, बल तथा ईर्ष्या पर आधारित न होकर प्रेम पर आधारित है। अहिंसा का साधारण अर्थ जीव हत्या न करना तथा किसी भी मानव जीव या प्रकृति को कष्ट पहुंचाना नहीं है। किन्तु गांधी अहिंसा का प्रयोग करते समय परिस्थितियों को भी महत्व देते है। वह कायरता या पलायन के पक्षधर नहीं है। अतः नि''चित रूप से अहिंसात्मक साधनों से ही मानव, प्रकृति तथा राष्ट्र का निर्माण सम्भव है।

गांधी की मूल परिकल्पना में अहिंसा का स्थान सर्वोपरि है। अहिंसा का गांधी ने सूक्ष्म विश्लेषण कर उसे व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में प्रयोग किया।[1] गांधी जी के जीवन का लक्ष्य केवल यही नहीं था कि वे भारत को अंग्रेजों की गुलामी से छुटकारा दिलाए। उनका वास्तविक लक्ष्य तो भारत का और सारे संसार का सत्य और अहिंसा के आदशों पर निर्माण करना था।[2] अहिंसा की अवधारणा भारत के संदर्भ में गांधी द्वारा ही परिभाषित कोई नवीन विचारधारा नही थी। जैन धर्म में भारत में महावीर स्वामी ने व्यापक रूप में अहिंसा को परिभाषित किया था। किन्तु अहिंसा का उस समय तथा आधुनिक समय में उदेश्य अलग–2 हो सकते है। महावीर स्वामी तथा महात्मा बुद्ध ने अहिंसा का संदेश स्वयं पर विजय प्राप्त करने के लिए दिया था तथा इसका अधिक उदेश्य था कि किसी भी जीव को किसी प्रकार का कष्ट न पहुंचे। उनके लिए तो मन से बुरा सोचना भी हिंसा था अर्थात उन्होंने अहिंसा का संदेश मानव, जीव तथा प्रकृति कल्याण के लिए दिया था। आधुनिक भारत में अहिंसा का प्रयोग विदेशी सत्ता से मुक्ति के लिए भी किया गया।

गांधी की अहिंसा की अवधारणा

''अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है न मारना किन्तु गांधी के लिए उसका अर्थ व्यापक है।''[3] अहिंसा का वास्तव में यह अर्थ है कि आप किसी का मन न दुखाएं। जो अपने को आपका शत्रु मानता है, उसके बारे में भी कोई अनुदार विचार मन में न रखे।[4]

अहिंसा से मेरा आशय कायरता से नही है मेरा निशचित मत है कि यदि विकल्प केवल कायरता और हिंसा के बीच हो तो हिंसा चुनी जाना चाहिए तथापि मैं क्षमाशीलता को वीरता का भूषण मानता हूँ।[5] अहिंसा का

अर्थ है– प्रेम, दया, क्षमा। अहिंसा एक महाव्रत है[6] सबसे बड़ी ताकत मानव को प्रदान की गई है वह है अहिंसा। सत्य उसका एकमात्र लक्ष्य है। लेकिन सत्य की प्राप्ति अहिंसा के अतिरिक्त और किसी उपाय से नही हो सकती।[7] गांधी जी ने इतिहास में पहली बार सत्य अहिंसा और शत्रु के प्रति भी प्रेम के आध्याात्मिक एंव नैतिक सिद्धान्तों का राजनीति के क्षेत्र में इतने विशाल पैमाने पर प्रयोग किया और इसमें सफलता प्राप्त की[8] एक बार गांधी जी ने स्वयं कहा था ''राजनीति में अहिंसा नया शस्त्र है जिसका विकास हो रहा है''[9]

1946 में गांधीजी के कुछ भक्तों ने उनसे प्रार्थना की थी कि वे अहिंसा विज्ञान पर एक पुस्तक की रचना करें। गांधीजी इसके लिए तैयार नहीं हुए। उनका कहना था कि इस प्रकार की पुस्तक उनके जीवन काल में अधुरी रहेगी यदि वह लिखी भी जाए तो मेरी मृत्यु के बाद ही लिखी जा सकती है और तब भी वह अधूरी ही रहेगी। कोई व्यक्ति ईश्वर का पूरी तरह से वर्णन नही कर सकता यही बात अहिंसा के संदर्भ में लागू होती है।[10] गांधी जी के अनुसार अहिंसा धर्म जिस मूल मान्यता से उत्पन्न होता है, वह यह है कि एक उन्नति में सबकी उन्नति है और एक की अधोगति में सबकी अधोगति है।[11]

उनके अनुसार अहिंसा में दीनता, भीरूता नही होगी, डर–डर कर भागना भी नही होता, अहिंसा में तो दृढता, वीरता, अड़िगता होनी चाहिए[12] आगे फिर गांधी जी का विचार है कि दया अहिंसा की कसौटी है अहिंसा का मूर्त रूप है।[13] विशुद्ध अहिंसा उच्चतम वीरता है।[14] गांधी जी अहिंसा की अवधारणा जैसा पहले भी कहा जा चुका है कि कोई नवीन अवधारणा नहीं है। यह बात स्वयं गांधी जी ने कई बार स्वीकार की है ''मैंने कोई नऐ सिद्धान्त प्रस्तुत नही किए है बल्कि पुराने सिद्धान्तों को ही पुनः प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया है।[15]

गांधी जी ने माना कि ''मैं स्वप्नदृष्टा नही हू। मैं स्वय को एक व्यवहारिक आदर्शवादी मानता हूँ। अहिंसा का धर्म केवल ऋषियों और संतो के लिए नही है। यह समान्य लोगो के लिए भी है। अहिंसा उसी प्रकार से मानवों का नियम है जिस प्रकार से हिंसा पशुओं का नियम है। पशु की आत्मा सुप्त अवस्था में होती है और वह केवल शारीरिक शक्ति के नियम को ही जानता है। जिन ऋषियों ने हिंसा के बीच अहिंसा की खोज की है, वे न्यूटन से अधिक प्रतिभावशाली थे। शस्त्रों के प्रयोग का ज्ञान होने पर भी उन्होंने उसकी व्यर्थता को पहचाना और संसार को बताया कि उसकी मुक्ति हिंसा में नही अपितु अहिंसा में है।[16] वर्तमान समय में अहिंसा के व्यवहारिक प्रयोग को लेकर भ्रम फैला हुआ है इसी कारण समाज में हिंसा बढ़ रही है। गांधी जी ने लिखा कि ''यह मानना बहुत गलत है कि अहिंसा का नियम व्यक्तियों के लिए ठीक है पर मानव समूहों के लिए कारगर नही है।[17]

मनव स्वभाव व अहिंसा–

मानव स्वभाव के विषय में गांधी का विचार उनके अध्यात्मिक और नैतिक सिद्धान्तों के साथ परस्पर जुड़ा हुआ है। मानव स्वभाव के वर्तमान स्वरूप तक ही सीमित न रह कर वे उसमे सुधार लाकर एक उत्तम मानव के सृजन में विश्वास करते है। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य में अच्छाई एंव बुराई विद्यमान है वे स्वयं के विषय में भी लिखते है कि 'क्या हममें प्रर्याप्त मात्रा में बुराई नहीं है? मुझमें तो काफी है और सदा ईश्वर से अपने को (बुराई से) शुद्ध करने की प्रार्थना करता हूँ। मनुष्य में भेद केवल अच्छाई बुराई के परिणाम का है।'[18] संभवतः डार्विन के सिद्धान्त से प्रभावित हो उन्होंने यह माना कि मानव जानवर से विकसित है उनके ही शब्दों में 'शायद हम सभी मूल रूप से जानवर थे। मैं यह विश्वास करने को तैयार हूँ कि हम विकास की धीमी प्रक्रिया द्वारा पशुओं से मनुष्य बने है।[19] गांधी के अनुसार ''हम पाशविक बल के साथ उत्पन्न हुऐ थें लेकिन हम इसलिए उत्पन्न हुऐ थे कि हम अपने अंदर रहने वाले ईश्वर का साक्षात्कार कर सके। यही मनुष्य का विशेषाधिकार है और यहीं मनुष्य को पशु वृति से अलग करता है। मनुष्य पशु के रूप में हिंसक है परन्तु आत्मा के रूप में अहिंसक है। जैसे ही वह अंतर्निहित आत्मा के प्रति सजग होता है, वह हिंसक नही रह सकता है।[20]

गांधी की अहिंसा के स्त्रोंत–

गांधीजी ने भारत में जन्म लिया था अतः सबसे अधिक उनके विचारों का स्त्रोंत भारतीय संस्कृति तथा परम्परा रही जिनका स्पष्ट प्रभाव गांधी की अहिंसा की अवधारणा पर दिखाई पड़ता है। गांधीजी के जीवन का लक्ष्य सत्यवादी होना था इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वे अहिंसक हुऐ थे। उन्हीं के शब्दों में 'मैं स्वभाव से, अहिंसक नहीं। जैसा कि किसी जैन मुनि ने एक बार ठीक ही कहा था, मैं अहिंसा का उतना पक्षधर नही हूँ जितना कि सत्य का और मैं सत्य को प्रथम स्थान देता हूँ और अहिंसा को द्वितिय क्योंकि जैसा कि जैन मुनि

ने कहा, मैं सत्य के लिए अहिंसा की बलि दे सकता हूँ। दरअसल अहिंसा को मैंने सत्य की खोज करते हुए पाया है।[21]

एक जगह और गांधी ने लिखा 'मझे लगता है कि मैं अहिंसा की अपेक्षा सत्य के आदर्श को ज्यादा अच्छी तरह समझता हूँ। और मेरा अनुभव मुझे बताता है कि अगर मैंने सत्य पर अपनी पकड़ ढीली कर दी तो मैं अहिंसा की पहेली को कभी नहीं सुलझा पाउगां...... दूसरे शब्दों में, सीधे ही अहिंसा का मार्ग अपनाने का साहस शायद मुझमें नहीं है।[22] गांधी ने एक जगह और कहा ''मेरा मानना है कि मैं बचपन से ही सत्य का पक्षधर रहा हूँ। यह मेरे लिए बड़ा स्वाभाविक था। मेरी प्रार्थनामय खोज ने 'ईश्वर सत्य है' के सामान्य सूत्र के स्थान पर मुझे एक प्रकाशमान सूत्र दिया। सत्य ही ईश्वर है। यह सूत्र एक तरह से मुझे ईश्वर के रू–ब–रू खड़ा कर देता है।[23] गांधी की अहिंसा की अवधारणा पर उपनिषदों का प्रभाव की दिखाई पड़ता है। उपनिषदों में कहा गया है कि हर प्राणी में परमात्मा का अंश है 'तत्वमसि' उपनिषदों का एक महावाक्य है गांधीजी इसके समर्थक है। उनका विचार था कि एक व्यक्ति का पतन होता है तो सम्पूर्ण मानव जाति नीचे गिरती है गांधी के अनुसार सत्य, अहिंसा, भक्ति, विनम्रता, अपरिग्रह, प्रेम, संयम, अस्तेय, सादगी आदि वृतियां आत्मनिर्माण की सीढ़ियां थी।[24] जैन धर्म के सिद्धान्तों का भी गांधी चिंतन पर स्पष्ट प्रभाव है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और बह्रमचर्य का गांधी जी के चिंतन में महत्तवपूर्ण स्थान है।[25] गांधीजी बुद्ध की शिक्षाओं के प्रशंसक थे विशेषकर उनकी अहिंसा भावना के।[26] गांधी जी सत्य और अहिंसा को एक दुसरे का पूरक भी मानते है उनके अनुसार अहिंसा मेरा भगवान है और सत्य मेरा भगवान है। जब मैं अहिंसा को खोजता हू तो सत्य कहता है, 'इसे मेरे माध्यम से ढूंढों जब में सत्य को खोजता हू अहिंसा कहती है इसे मेरे माध्यम से ढूंढों।[27] गांधी जी ने अहिंसा का पाठ अपनी पत्नी से भी सीखा उन्होंने लिखा 'मैंने अहिंसा का पाठ अपनी पत्नी से पढ़ा, जब मैंने उसे अपनी इच्छा के सामने झुकाने की कोशिश की। ओर मेरी, इच्छा के दृढ प्रतिरोध, दूसरी ओर मेरी मूर्खता को चुपचाप सहने की उसकी पीड़ा को देखकर अंततः मुझे अपने उपर बड़ी लज्जा आई और मुझे इस मूर्खतापूर्ण धारणा से मुक्ति मिली कि मै उस पर शासन करने के लिए ही पैदा हुआ हूँ। अंत मे, वह मेरी अहिंसा की शिक्षिका बन गई।[28] इस प्रकार गांधी की अहिंसा के अनेक स्त्रोत दिखाई पड़ते है।

अहिंसक बनने का मूलमंत्र–

गांधी की अहिंसा को अपने व्यक्तित्व तथा जीवन मे केवल तभी उतार सकते है जब ईश्वर में विश्वास हो उनके शब्दों में 'ईश्वर में जीती–जागती आस्था न हो तो अहिंसा में आस्था हो ही नही सकती। अहिंसक व्यक्ति ईश्वर की शक्ति एंव अनुग्रह के बिना कुछ नही कर सकता। इसके बिना वह क्रोध रहित, भयरहित अैर प्रतिकार रहित होकर मरने का साहस नहीं कर पाएगा। यह साहस इस विश्वास से उत्पन्न होता है कि ईश्वर सबके ह्रदयों में विराजमान है और यह कि ईश्वर की उपस्थिति में भय करने की कोई जरूरत नहीं है। ईश्वर की सर्वत्या पिता के ज्ञान का अर्थ है, उन व्यक्तियों के जीवन के प्रति भी आदर जिन्हे तुम्हारा विरोधी कहा जा सकता है।[29] गांधी जी ने अहिंसक बनने के लिए यह कहा कि 'अहिंसा के मार्ग का पहला कदम यह है कि हम अपने दैनिक जीवन में परस्पर सच्चाई, विनम्रता, सहिष्णुता और प्रेममय दयालुता का व्यवहार करे।[30] गांधी जी का अहिंसक होने का एक और प्रमुख तरीका यह है कि मानव अहिंसा को कायरों या कमजोरों का हथियार न माने यह वीर लोगों का हथियार है। उनके अनुसार अहिंसा उस तरह काम नही करती जिस तरह हिंसा करती है। यह उलटे तरीके से काम करती है। हथियारबंद आदमी स्वभावतया अपने हथियारों पर भरोसा करता है। जो व्यक्ति जान–बूझकर निहत्था है, वह अदृश्य बल पर भरोसा करता है।[31]

गांधी जी ने अहिंसा के साथ–साथ परिस्थितियों को भी महत्व देते है एक जगह उन्होंने कहा 'मेरी अहिंसा इस बात की इजाजत नहीं देती कि खतरा सामने देखकर अपने प्रियजनों को असुरक्षित छोड़कर खुद भाग जाओ। हिंसा और कायरतापूर्ण पलायन में से मैं हिंसा को ही तरजीह दूंगा। जिस प्रकार मैं किसी अंधे आदमी को सुंदर दृश्यों का आन्नद लेने के लिए प्रेरित नही कर सकता, उसी प्रकार कायर को अहिंसा का पाठ नही पढ़ा सकता। अहिंसा तो वीरता की चरम सीमा है खूंखार कुते को देखकर भाग जाने वाले खरगोश इसलिए नही भागता कि वह अहिंसक ह ै वह बेचारा तो कुते को देखते ही भय से कांपने लगता है और अपनी जान बचाने के लिए भागता है।[32] इसी प्रकार गांधी जी ने एक जगह और कहा कि 'अहिंसा का मार्ग हिंसा के मार्ग की तुलना में कही ज्यादा साहस की अपेक्षा रखता है।[33] गांधी जी यह भी कहा कि 'जिस प्रकार हिंसा के प्रशिक्षण मे मारने की कला सीखना जरूरी है उसी प्रकार उसी प्रकार अहिंसा के प्रशिक्षण में मरने की कला

सीखना जरूरी है।[34] गांधी जी ने व्यक्ति के साथ–साथ राष्ट्र को अहिंसक होने का मूल मंत्र दिया है उनके अनुसार यदि भारत को अहिंसा के मार्ग पर अपना विकास करना है तो मेरा सुझाव है कि उसे बहुत सी चीजों का विकेंद्रीकरण करना होगा। पर्याप्त बल के बैगर केंद्रीकरण को कायम रखना और रक्षा करना संभव नहीं है ग्रामीण आधार पर संगठित भारत को सैनिक, नौसैनिक और वायुसैनिक बलों से सुसज्जित भारत की अपेक्षा बाहरी आक्रमणों का खतरा बहुत कम होगा।[35] एक जगह उन्होंने लिखा 'बल पर आधारित आधुनिक राज्य बाहरी या आंतरिक अव्यवस्था की ताकतो का अहिंसक तरीके से मुकाबला नहीं कर सकता। आदमी ईश्वर और धन की पूजा साथ–साथ नही कर सकता।[36] गांधी का राष्ट्र को संदेश था कि मैं यह नही कहता कि भारत पर आक्रमण करने वाले लुटेरों, चोरों या राष्ट्रों से निपटने के लिए हिंसा का सहारा मत लो। लेकिन इसमे अच्छी तरह से कामयाब होने के लिए हमे अपने ऊपर संयम रखना सीखना चाहिए। जरा–जरा सी बात पर पिस्तौल उठा लेना मजबुती नही बल्कि कमजोरी की निशानी है। आपसी घूसेंबाजी हिंसा का नही, बल्कि नामर्दगी का अभ्यास है।''[36]

इस प्रकार गांधी की अहिंसा सदैव उपयोगी है। वर्तमान समाज की इर्ष्या, तनाव तथा युद्ध जैसी स्थिती को केवल अहिंसा के मार्ग से ही सुलझाया जा सकता है। गांधी के अनुसार भारत अब स्वतंत्र है मुझे अब भी यह विश्वास है कि भारत समयोचित गरिमा का प्रदर्शन करेगा और दुनिया को दिखा देगा कि दो नये राज्यों का जन्म शेष मानवता के लिए अभिशाप नहीं अपितु वरदान है। स्वतंत्र भारत का कर्त्तव्य है कि यदि वह अपनी स्वतन्त्रता को मूल्यवान समझता है तो सामूहिक संघर्षों को सुलझाने के लिए अहिंसा के शस्त्र को पूर्णता प्रदान करे।[37]

आज की दुनिया मे हिंसा एक प्रमुख समस्या बन गई है। हमारी आधुनिक सभ्यता रूपी वृक्ष को हिंसा दीमक की तरह खा रही है अतः अगर राष्ट्र व समाज को शक्तिशाली बनाना है तो यह केवल तभी सम्भव है जब अहिंसा की मूल अवधारणा तथा महत्व को समझना पड़ेगा। सच्ची मानवता की स्थापना अहिंसा के बिना असम्भव है।

संदर्भ सूचीः–

1. मिश्र, अनिल दत्त, गांधी एक अध्ययन पृष्ठ–177
2. गुप्त, विश्व प्रकाश व गुप्त मोहनी, महात्मा गांधी व्यक्ति और विचार पृष्ठ–63
3. सुजाता, गांधी की नैतिकता पृष्ठ–13
4. वही, पृष्ठ–13
5. वही, पृष्ठ–14
6. वही, पृष्ठ–15
7. वही, पृष्ठ–15
8. गुप्त विश्व प्रकाश व गुप्त मोहनी, महात्मा गांधी व्यक्ति और विचार पृष्ठ–63
9. वही, पृष्ठ–65
10. वही, पृष्ठ–65
11. सुजाता, गांधी की नैतिकता पृष्ठ–17
12. वही, पृष्ठ–17
13. वही, पृष्ठ–17
14. वही, पृष्ठ–17
15. प्रभु आर0के. तथा राव यू.आर0 द्वारा संकलन तथा संपादन, महात्मा गांधी के विचार
16. वही, पृष्ठ–65
17. वही, पृष्ठ–65
18. सिन्हा, मनोज द्वारा संपादन गांधी तक अध्ययन पृष्ठ–163
19. वही, पृष्ठ–65
20. वही, पृष्ठ–65
21. हरिजन 28.03.1936 पृष्ठ–49 (प्रभु आर0के. तथा राव यू.आर0 द्वारा संकलन तथा संपादन, महात्मा गांधी के विचार)

22. वही, पृष्ठ–65
23. हरिजन 9.8.1942 पृष्ठ–264
24. गुप्त विश्व प्रकाश व गुप्त मोहनी, महात्मा गांधी व्यक्ति और विचार पृष्ठ–79
25. वही, पृष्ठ–85
26. वही, पृष्ठ–87
27. यंग इण्डिया 4.6.1925 पृष्ठ–191 (प्रभु आर0के. तथा राव यू.आर0 द्वारा संकलन तथा संपादन, महात्मा गांधी के विचार)
28. हरिजन 24.12.1938 पृष्ठ–394 (वहीं)
29. हरिजन 18.6.1938 पृष्ठ–152 (वहीं)
30. हरिजन 2.4.1936 पृष्ठ–64 (वहीं)
31. हरिजन 28.6.1942 पृष्ठ–201 (वहीं)
32. यंग इण्डिया 28.5.1924 पृष्ठ–178 (वहीं)
33. हरिजन 4.8.1946 पृष्ठ–248–49 (वहीं)
34. हरिजन 1.9.1940 पृष्ठ–268 (वहीं)
35. हरिजन 30.12.1939 पृष्ठ–391 (वहीं)
36. यंग इण्डिया 29.5.1924 पृष्ठ–176 (वहीं)
37. हरिजन 31.8.1947 पृष्ठ–302 (वहीं)